● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

३. अलग अंदाज में होली

– पवन चौहान

जन्म : ३ जुलाई १९७८, मंडी (हिमाचल प्रदेश) । **रचनाएँ :** किनारे की चट्टान (कविता संग्रह) विभिन्न कहानियाँ, लेख आदि ।
परिचय : पवन चौहान जी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लिखते रहते हैं । बालसाहित्य में आपका उल्लेखनीय योगदान है ।
प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने 'बुजुर्गों' की समस्याएँ और उनके प्रति सद्‌व्यवहार पर प्रकाश डाला है ।

वाचन जगत से

अपने पड़ोसी राज्यों में होली किस प्रकार मनाई जाती है ? अंतरजाल/पुस्तकों से जानकारी प्राप्त करो और बताओ ।

- राज्य का नाम
- मनाने की विधि
- व्यंजन विशेष

होली का त्योहार नजदीक था । मुहल्ले के बच्चे इस बार त्योहार को नए तरीके से मनाने के लिए इकट्‌ठे हुए । किसी ने कहा, 'इस बार हम डीजे के साथ थिरकते हुए होली मनाएँगे ।' कोई बोली, 'इस बार हम रसायनवाले रंगों का त्याग करेंगे ।' सभी की बातें सुनने के बाद शालिनी बोली, ''मैं सोचती हूँ, इस बार हम कोई अच्छा काम करते हुए होली मनाए ।''

''वह कैसे ?'' सबने पूछा । शालिनी ने कहा, ''इस बार की होली का त्योहार शहर के वृद्‌धाश्रम में मनाएँ तो कैसा रहेगा ? वहाँ सभी बुजुर्ग अपने बुढ़ापे में छोटी-छोटी खुशियाँ तलाशने की कोशिश में रहते हैं। उनके अपने वहाँ उनको बेसहारा छोड़कर चले गए होते हैं, जो मुझे बड़ा ही दुखदायी लगा । कितना अच्छा होगा कि होली का त्योहार हम उनके साथ मनाएँ । उन्हें इससे ढेर सारी खुशियाँ मिलेंगी और इस त्योहार में वे अपनों की कमी भी महसूस नहीं करेंगे । हमें भी उनसे इस दौरान बहुत सारी अच्छी बातें सीखने को मिलेंगी ।'' शालिनी की बात का सभी ने समर्थन किया ।

बच्चे इस बार की होली के लिए बहुत उत्सुक दिख रहे थे । उन्होंने तैयारियाँ कर ली थीं । इसके लिए उन्होंने वृद्‌धाश्रम से अनुमति भी ले ली थी ।

होली का दिन आ गया । बच्चे रंगों के साथ वृद्‌धाश्रम पहुँचे । वृद्‌धों को नमस्कार किया और सबके हाथ में रंग की एक-एक थैली पकड़ा दी । थैलियाँ हाथ में आते ही वृद्‌धों में जैसे एक नई स्फूर्ति आ गई । वे इस मौके का कई दिनों से इंतजार कर रहे थे । उन्होंने 'होली है...' के शोर के साथ उनपर रंगों की बरसात की । आज जाने कितने वर्षों के बाद इस आश्रम में खुशी का माहौल देखने को मिल रहा था । बुजुर्ग आज सचमुच ही अपने सारे दुख भूल गए थे ।

रंगों का यह खेल काफी देर तक चलता रहा । जब सारे थक गए तो वे वृद्‌धाश्रम के छोटे-से पार्क में बैठ गए । थोड़ी देर सुस्ताने के उपरांत सबने भोजन किया । भोजन के बाद बुजुर्गों ने सभी बच्चों को अपनी जिंदगी के हँसी-मजाक के किस्से सुनाए और उनका खूब मनोरंजन किया । उन्होंने कहा, ''इस अंदाज की होली सदा याद रहेगी ।'' बच्चों ने भी बुजुर्गों को गीत, कविता के साथ नृत्य-गान करके खूब आनंदित किया । आज

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, सामूहिक मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोतर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ का आशय स्पष्ट करें । किसी एक परिच्छेद का श्रुतलेखन कराके एक-दूसरे से जाँच कराएँ ।

मेरी कलम से

किसी भी त्योहार पर मुद्‌दों के आधार पर निबंध लिखो : प्रस्तावना, महत्त्व, कब, क्यों, कैसे, उपसंहार ।

वृद्‌धाश्रम का माहौल ऐसा था, जैसा आज तक यहाँ कभी नहीं देखा गया । बचपन और बुढ़ापा आज एक मंच पर बैठकर खूब मस्ती कर रहे थे ।

एक बुजुर्ग ने कहा, ‘‘बच्चों ने आज हमें खुशी के वे पल दिए हैं जो हमारे अपनों ने हमसे कब के छीन लिए थे । ये बच्चे समझदार और अच्छी सोच रखने वाले इनसान हैं । बच्चों में यह लौ जलती रहनी चाहिए । यह अब आप लोगों की जिम्मेदारी है । यही वह लौ है, जो आने वाले वक्त में ऐसी संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करेगी जो इन वृद्‌धाश्रमों को भरने से रोक पाएगी और बुजुर्ग अपनी अंतिम साँझ को अपनों के साथ इसी तरह से हँसी-खुशी गुजार पाएँगे ।’’

बुजुर्ग की बातों को सभी बच्चों ने गाँठ बाँध लिया । उन्होंने मन-ही-मन अपने आप से ऐसे समाज के निर्माण का वादा कर लिया था जहाँ बुजुर्गों के साथ पूरा न्याय हो सकेगा और वे अपनी जिंदगी के आखिरी दिन अपनों के साथ हँसी-खुशी बिता सकेंगे ।

शाम होने को थी । अब बच्चों ने घर वापसी के लिए बुजुर्गों से आज्ञा माँगी । बुजुर्गों ने सोचा न था कि खुशी के ये पल इतनी जल्दी बीत जाएँगे लेकिन समय काफी हो चुका था । वे अब उनको ज्यादा समय तक नहीं रोक सकते थे । जाने से पहले बुजुर्गों ने सब बच्चों को कॉपी और पेन भेंट किए । बच्चे फूले न समाए ।

बच्चे वृद्‌धाश्रम के गेट से बाहर निकल रहे थे । उन्हें जाते देख बुजुर्गों की आँखें भरती जा रही थीं । वे इन नन्हे फरिश्तों का तहे दिल से शुक्रिया अदा कर रहे थे । गैर होते हुए भी उन्हें अपनों-सा प्यार, ढेर सारी खुशियाँ दीं । बच्चे मस्ती में नाचते, गाते जब अपनी बस्ती में पहुँचे तो सभी मुहल्लेवासियों ने शालिनी और उसकी टीम का तालियों के साथ जोरदार स्वागत किया । वे अपने बच्चों द्‌वारा किए गए इस नेक कार्य पर गर्व महसूस कर रहे थे । सचमुच, यह एक नए प्रकार की होली थी, जो एक सकारात्मक सोच के साथ संपन्न हुई ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

बुजुर्ग = वृद्‌ध
समर्थन = सहमति
माहौल = वातावरण
लौ = ज्योति
साँझ = शाम
नेक = अच्छा

मुहावरे

गाँठ बाँध लेना = प्रण कर लेना
फूला न समाना = आनंदित होना

खोजबीन

कृत्रिम तथा प्राकृतिक रंगों संबंधी जानकारी पढ़ो ।

- कृत्रिम रंगों का कच्चा माल
- प्राकृतिक रंगों का कच्चा माल

विचार मंथन

।। उत्सव, पर्व मनाएँ, भेद-भाव भूल जाएँ ।।

अध्ययन कौशल

संदर्भस्रोतों की जानकारी प्राप्त करो और उनकी सूची बनाकर सुनाओ ।

✲ टिप्पणियाँ लिखो :

(क) वृद्धाश्रम में जाकर होली मनाने के कारण

(ख) बुजुर्गों के बच्चों के बारे में विचार

(ग) बुजुर्गों की बातों का बच्चों पर प्रभाव

(घ) शालिनी और उसकी टीम का स्वागत

सदैव ध्यान में रखो

सदैव विनम्र शब्दों में ही निवेदन करो ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्य पढ़ो और मोटे और ( ) में छपे शब्दों पर ध्यान दो :

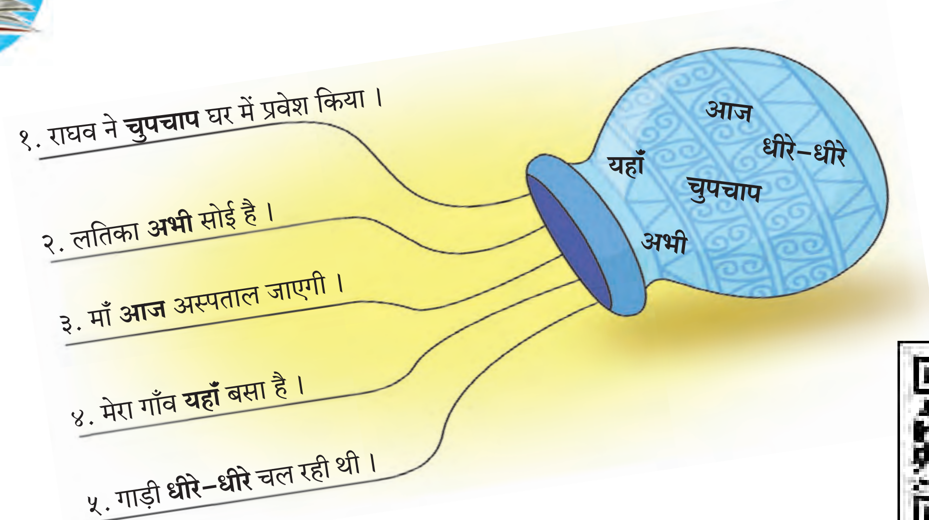

उपर्युक्त वाक्यों में **चुपचाप, अभी, आज, यहाँ, धीरे-धीरे** ये शब्द क्रमशः प्रवेश करना, सोना, जाना, बसना, चलना इन क्रियाओं की विशेषता बताते हैं । ये शब्द **क्रियाविशेषण अव्यय** हैं ।

१. नागपुर से रायगढ़ (की ओर) गए ।

२. ताकत (के लिए) संतुलित आहार आवश्यक है ।

३. जन्म (के बाद) मामी जी ने मुझे गोद ले लिया ।

४. जलाशय चाँदी (की भाँति) चमचमा रहा था ।

५. शौनक बड़ी बहन (के साथ) विद्‍यालय जाने की तैयारी में लग गया।

उपर्युक्त वाक्यों में **की ओर, के लिए, के बाद, की भाँति, के साथ** ये क्रमशः नागपुर और रायगढ़, ताकत और संतुलित आहार, जन्म और मामी जी, जलाशय और चाँदी, बड़ी बहन और विद्‍यालय इनके बीच संबंध दर्शाते हैं । ये शब्द **संबंधबोधक अव्यय** हैं ।